[illegible] गयाप्रसाद जैन

स्व० पूज्य १०५ क्षु० चिदानन्द जी महाराज द्रोणगिरि

हे सन्त तुम्हारे बिना प्रान्त
नेता विहीन हो गया क्लान्त
वह तुम जैसी क्षमता महान
है नहीं किसी में दृश्य मान
हे तपः पूत हे गुण निधान
सच्चिदानन्द रस किया पान
तज जीर्ण देह पहुँचे सुधाम
स्वीकार करो अन्तिम प्रणाम

जन्म	स्वर्गवास
घनगुवां (छतरपुर) म० प्र०	पथरिया (दमोह)
स० १९५८	५-३-१९७०

कमलकुमार जैन
द्रोणगिरि (छतरपुर) म० प्र०

प्रकाशक—
द्रोण प्रान्तीय नव युवक सेवा संघ
द्रोणगिरि (छतरपुर) म० प्र०

श्रद्धान्जलि दिवस
द्रोणगिरि
२९-३-७०

शिक्षा संस्थाओं की स्थापना—

जिस समय बुन्देलखण्डमें ज्ञान प्रसार के लिये स्कूल पाठशाला नहीं थे उस समय पूज्य वर्णी जी एवं आपने बुन्देलखण्ड में अज्ञान अन्धकार को मिटाकर ज्ञानदीप जलाने का प्रयत्न किया पूज्य क्षु० चिदानन्द जी महाराज ने प्रान्त भर में भ्रमण कर समाज बहुल प्रत्येक ग्राम में जैन पाठशाला की स्थापना कर जहां जैन बालकों का जैन धर्म का शिक्षा की व्यवस्था की वहाँ अजैन बालकों को भी शिक्षा सुविधा दी। अन्धों की शिक्षा व्यवस्था के लिये दो अन्ध विद्यालयों की सुविधा की भी स्थापना आपने की। वर्तमान में भी जब कभी आप ग्रामों में भ्रमण करते थे सबसे पहिले वहां जैन बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने की व्यवस्था है या नहीं यदि नहीं तो वहाँ तुरन्त ही पाठशाला खोलते थे और समाज से उसके बराबर चलाते रहने के लिये आर्थिक व्यवस्था करते थे। आज उनके द्वारा स्थापित कितनीही पाठशालायें समाजकी उदासीनता के कारण बन्द भले ही होगई हों परन्तु उनकी कोशिश यही रही कि समाज की भावी पीढ़ी कुछ न कुछ धार्मिक ज्ञान अवश्य प्राप्त करे। इसके अलावा आप स्वयं भी जगह जगह भ्रमण कर बाल युवा वृद्धों को धार्मिक शिक्षा के रूप में मोक्ष शास्त्र, छहढाला उपयोगी भजन भक्तामर आदि याद कराकर दूसरे ग्राम को प्रस्थान करते थे आपकी यह चलती फिरती पाठशाला बिना किसी प्रचार के लगभग प्रतिदिन १२ घन्टे चलती थी। ऐसा लगन वाला साधु जो हमेशा धार्मिक शिक्षा देता रहे पूज्य क्षु० चिदानन्द जी के अलावा अन्य नहीं मिला।

उदासीनआश्रमों की स्थापना—

पूज्य क्षु० चिदानन्द जी की भावना रहती थी कि प्रत्येक व्यक्ति जिस समय वह चौथी अवस्था में पदार्पण करता है निराकुलता

पूर्वक, गृह त्यागकर मनुष्य जीवन का उच्च मार्ग त्याग की ओर उन्मुख हो अपने शेष जीवन का सुखसे धार्मिक वातावरण में व्यतीत करे इस भावना से प्रेरित होकर इन्होंने गृह विरत लोगों के लिये उदासीन आश्रमों की स्थापना श्री दि० जैन सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि, अहार नैनागिरि नवागढ़, शाहगढ़, बराडा, खड़ेरी बरायठा आदि स्थानों में की और वहाँ धर्मसाधना के उपयुक्त वातावरण बनाया इसके साथ ही उनकी भावना थी कि आश्रमों में रहने वाला व्रती पूर्ण योग्य बने इससे उसकी शिक्षा व्यवस्था हेतु विद्वानों की व्यवस्था की। श्री गुरुदत्त दि० जैन सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि जो उनका प्रमुख आश्रम है में श्रीमान पं० गोरेलाल जी शास्त्री द्रोणगिरि द्वारा शिक्षण व्यवस्था सुचारुरूप से चलती है जिसके परिणाम स्वरूप आज इस आश्रम में शास्त्री तक की परीक्षा देने वाले व्रती हैं।

तीर्थ क्षेत्रों की उन्नति

आपमें धर्मायतनों की सुरक्षा, विकाश एवं उन्नति की भावना हमेशा जागरूक रहती थी द्रोणगिरि, नैनागिरि, अहार आदि क्षेत्रों की उन्नति के लिये आपने बहुत अधिक प्रयत्न किया इन तीर्थ क्षेत्रों के वार्षिक मेले में पहुचकर समाज को धार्मिक लाभ देने के अलावा क्षेत्र की वार्षिक आर्थिक समस्या का समाधान भी उपस्थित समाज द्वारा कराते थे। टीकमगढ़ जिले में एक प्राचीन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ का विकाश तो आपकी कृपा का ही द्योतक है।

समाज सुधारक

चूंकि आपका जन्म बुन्देलखण्ड में ही उन परिस्थितियों में हुआ था जहाँ सामाजिक रूढियाँ अत्यन्त उग्र रूप धारण किये हुये थीं। इन बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, नर विक्रय मरण भोज आदि कुप्रथाओं के विरुद्ध आपने पू० वर्णी जी के साथ

प्रतिष्ठा पितामह पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प की जीवन्तकृति नवागढ़

* प्रो. डॉ. भागचन्द्र जैन भागेन्दु *

संस्कृति के प्राणतत्व **तीर्थ संरक्षण** को भारतीय संस्कृति का आधार स्तम्भ मानकर इस व्रत के -सर्वतो भावेन सम्यक् परिपालनार्थ अहर्निश दत्तावधान प्रतिष्ठारत्नाकर, प्रतिष्ठा पितामह महान् मनीषी श्रद्धेय पं. गुलाबचन्द्र जी जैन पुष्प टीकमगढ़ (म.प्र.) अब हमारे बीच सशरीर नही हैं, किन्तु उनकी एक महनीय जीवन्त कृति विद्यमान है - **श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ (नन्दपुर) नावई, जिला ललितपुर (उ.प्र.)।**

प्रकृति के झञ्झावतों, प्राकृतिक और राजनैतिक प्रकोपों -सांस्कृतिक परिवर्तनों आदि से घोर उपेक्षित/अपरिचित इस स्थल की सबसे पहले सुध लेने वालों में अग्रगण्य हैं। प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प। वस्तुतः यह स्थल सन्तों की पुरातन साधना स्थली है।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र **नवागढ़** जैन धर्म के 18वें तीर्थंकर भगवान अरनाथ स्वामी के अतिशय सम्पन्न होने के साथ सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसका इतिहास शास्त्रों, पुराणों एवं किवंदतियों में परे है। इस क्षेत्र में उपलब्ध शिलालेख एवं प्रशस्तियों में इसकी प्राचीनता जहाँ संवत् 1180 (सन् 1123 ई.) है, वहीं शिल्प एवं पुरासम्पदा की कलाकृतियाँ इसके 9वीं सदी से पूर्व की साक्षी है। इस परिक्षेत्र के शैलाश्रय और शैल चित्र प्रागैतिहासिक हैं।

आदरणीय ब्रह्मचारी पं. जयकुमार जी निशांत जिन ने स्वेच्छा से शासकीय सेवा से सेवानिवृत्ति लेकर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत लिया, अपने पिता प्रतिष्ठा पितामह पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प की प्रतिष्ठा अनुष्ठान की धरोहर को सहेजकर 200 पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव सम्पन्न कराने का गौरव प्राप्त किया है। आपने 900 वर्ष प्राचीन नवागढ़ क्षेत्र के संवर्धन का संकल्प लेकर इसकी मौलिकता एवं शिल्पकला को संरक्षित रखते हुए विकास कार्य सम्पन्न कराया है।

आदरणीय ब्र. पं. निशांत जी ने नवागढ़ के सरपंच श्री रामनारायण यादव के साथ अनेक माह दिन-दिनभर क्षेत्रीय बीहड़ एवं पर्वतों पर भ्रमण करके कई ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त किये हैं। आपने एक **शैलाश्रय में** अतिप्राचीन **प्राग् ऐतिहासिक शैलचित्र** खोजे हैं, इनमें से अधिकांश काल कवलित होकर केवल रंग के धब्बे एवं लकीरें मात्र शेष रह गये हैं, शेष बचे चित्र प्राकृतिक परिवेश, धार्मिक प्रभावना एवं साधना स्थलों का संकेत कर रहे हैं।

आदरणीय ब्र. पं. निशांत जी इतिहास की कड़ियों को जुटाने में स्थानीय वरिष्ठजनों शिल्पविद्, कलाविद्, इतिहासविदों को सतत इस क्षेत्र पर लाने का सम्यक् पुरुषार्थ कर रहें है। इनमें पुराविद्या विशेषज्ञ पं. नीरज जी सतना, प्रसिद्ध प्रतिमाविज्ञानी डॉ. कस्तूरचंद जी सुमन, प्रशस्तिवाचक **डॉ. भागचन्द्र जी भागेन्दु, इतिहास एवं कलाविद्** डॉ. ए.पी.गौड- पुरातत्व अधिकारी लखनऊ, डॉ. एस. के. दुबे पुरातत्त्व अधिकारी झाँसी, डॉ. के.पी. त्रिपाठी एवं श्री हरिविष्णु अवस्थी, इतिहासविद्, डॉ. स्नेहरानी जैन, एवं डॉ. मसकूर अहमद

शिल्पकला एवं शैलचित्र विशेषज्ञ डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, क्योंकि बायीं ओर से दायी ओर क्रमशः साधना के वृद्धिगंत आयामों को दर्शाया गया है जहाँ साधक वसतिका में सल्लेखना धारण करके आत्मशक्ति का विकास करते हुए पंच महाव्रतों को धारण करके चारों आराधनाओं से कषाय को कृष करके अहिंसा धर्म की चतुर्दिक प्रभावना करके सप्त परम स्थान के श्रेष्ठ पद मोक्ष अर्थात् निर्वाण को प्राप्त करता है।

आदरणीय ब्र. पं. जयकुमार निशांत द्वारा खोजे गये शैलाश्रय प्रागैतिहासिक शैलचित्र-जैन धर्म की प्राचीनता, जैन जीवन पद्धति, साधना एवं मृत्यु महोत्सव की पुरातन परम्परा के साथ नवागढ़ की समृद्धिशाली जैन संस्कृति के संस्थापक जैन शासक की प्रतिमा इसे विशेष साधना निर्वाण भूमि के रहस्यों को उद्घाटित करने वाले हैं।

वस्तुतः आदरणीय ब्र. पं. निशान्त जी का सतत् जागरूक पुरुषार्थ नवागढ़ क्षेत्र को भारतीय संस्कृति, कलाशिल्प एवं पर्यटन का विशेष रूप प्रदान करेगा, जिससे सम्पूर्ण विश्व इस क्षेत्र पर आकर रहस्यमय सूत्रों को उद्घाटित कर आत्मशांति प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकेगा।

इस परिक्षेत्र के शैलचित्रों एवं शैलाश्रयों की प्राचीनता और कलावशेषों का सम्यक् अध्ययन इस क्षेत्र के सांस्कृतिक इतिहास को किस शताब्दी तक ले जाता है ? प्रतीक्षित है। शासन एवं प्रशासन का ध्यान इन शैलाश्रयों तथा शैल चित्रों के संरक्षण और कला प्रेमियों - मर्मज्ञों-मनीषियों का ध्यान इनके अध्ययन-अनुशीलन की ओर प्रार्थित है। कहीं ऐसा न हो कि यहाँ के शैल-चित्र भी अतीत की स्मृतियों को समेटे काल के क्रूर थपेड़ों में विलीन हो जायें। या आधुनिक संसाधनों द्वारा भवन, सेतु, मार्ग आदि के निर्माण हेतु बोल्डर, गिट्टी बनकर हमेशा के लिए विनष्ट हो जाँय।

प्रकृति की गोद में समाये, इतिहास, संस्कृति, कला और पुराविद्याओं के महत्वपूर्ण इस विस्मृत, अध्याय को प्राण-पण से पुनरूज्जीवित करने वाले उन महामनीषी (स्व.) प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प को कोटि कोटि नमन। और उनके दायाद को न केवल सुरक्षित प्रत्युत कोटि-गुणित अधिक सम्वर्द्धित कर विश्वस्तर पर सुप्रतिष्ठित करने वाले नवागढ़ क्षेत्र के सभी कार्यकत्ताओं का सम्यक् पुरुषार्थ एवं आदरणीय बाल ब्रह्मचारी प्रतिष्ठाचार्य पं. जय निशान्त जी का सतत् जागृत सार्थक समर्पण शतशः अभिनन्दनीय है। उनकी लक्ष्य-भेदी साधना श्रमण संस्कृति के गौरवपूर्ण अतीत के साथ मध्यकालीन साधना के अनुद्घाटित अध्यायों को सम्पुष्ट करके **चेदि जनपद** के इस सम्पूर्ण परिक्षेत्र की समृद्धि को रूपायित कर सकेगी।

इस तीर्थ के प्रणेता श्रद्धेय पं. (स्व.) गुलाबचन्द्र जी पुष्प की सहजता, सरलता, सर्व सुलभता, सतत जागरूकता, आर्षमार्गीय सिद्धांतों में सुदृढ़ निष्ठा, निर्भीक जीवन शैली, और प्रातिभ व्यक्तित्व को प्रागैतिहासिक निधियों को अपनी क्रोड में संजोये यह नवागढ़ अतिशय क्षेत्र युग-युगों तक स्मरण कराता रहेगा।

ऐसे मनस्वी व्रती, मनीषी, प्रतिष्ठा पितामह श्रद्धेय पं. पुष्प जी का चिरवियोग श्रमण संस्कृति और समाज की अपूरणीय क्षति है। उनकी पावन स्मृति को कोटि कोटि नमन।